02
अध्याय

जमीनी स्तर पर उद्यमिता एवं धन सृजन

அருவினை யென்ப உளவோ கருவியான்
காலம் அறிந்து செயின்.

– Thirukural, Chapter 76, verse 753.

प्रासंगिक अनुवाद: वह जो सभी संसाधनों एवं अवसरों का कुशलतापूर्वक प्रयोग करता है वह सक्षम है (उद्यमी) और उसके लिए कुछ भी हासिल करना असंभव नहीं है।

भारत सरकार के ''स्टार्ट अप इंडिया'' अभियान में भारत में उत्पादकता वृद्धि एवं धन सृजन के संवर्धन के लिए उद्यमिता की उत्तरोत्तर महत्वपूर्ण युक्ति के रूप में पहचान की गई है। इस पहल को देखते हुए इस अध्याय में भारत के 500 जिलों की उद्यमिता संबंधी कार्यकलाप के विषय एवं संचालकों का परीक्षण किया गया है। जो प्रशासनिक सूची स्तंभ में सबसे नीचे हैं। एमसीए-21 डेटाबेस से व्यापक आंकड़ों का प्रयोग करते हुए सभी जिलों में औपचारिक क्षेत्र में प्रारंभ की गई नई फर्मों का विश्लेषण किया गया है। सर्वप्रथम, उद्यमिता पर विश्व बैंक के आंकड़ों का उपयोग करते हुए, यह अध्याय इस बात की पुष्टि करता है कि भारत नई फर्मों के निर्माण के मामलें में तीसरे स्थान पर है। इसी आंकड़े से पता चलता है कि 2014 से भारत मे नई फर्म का निर्माण प्रभावशाली रूप से बढ़ा है। 2006-2014 के दौरान औपचाकरिक क्षेत्र में नई फर्मों की संख्या 3.8 प्रतिशत के संचयी वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ी जबकि 2014 से 2018 तक विकास दर 12.2 फीसदी रही। नतीजनत, 2014 में बनाई गई लगभग 70,000 नई फर्मों से, 2018 में नई फर्मों की संख्या लगभग 80 प्रतिशत बढ़कर 1,24,000 हो गई है। दूसरा, सेवा क्षेत्र में भारत की नई आर्थिक संरचना, यानी तुलनात्मक लाभ को दर्शाते हुए, सेवाओं में नई फर्म का निर्माण विनिर्माण, बुनियादी ढांचे या कृषि की तुलना में काफी अधिक है। तीसरा, जमीनी स्तर पर उद्यमशीलता केवल आवश्यकता से प्रेरित नहीं है क्योंकि जिले में नई फार्मों के पंजीकरण में 10 प्रतिशत की वृद्धि के कारण जीडीडीपी में 1.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस प्रकार, प्रशासनिक पिरामिड के निचले स्तर में उद्यमशीलता का एक जिले का जमीनी स्तर पर संपत्ति सृजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जीडीडीपी पर उद्यमशीलता की गतिविधि का यह प्रभाव विनिर्माण और सेवा क्षेत्रें के लिए अधिकतम स्तर पर है। चौथा, नई कंपनियों का निर्माण भारतीय जिलों और क्षेत्रें में बहुत विषम है। इसके अतिरिक्त, यह स्थिति पूरे भारत में फैली हुई है, केवल कुछ शहरों तक ही सीमित नहीं है। पांच, एक जिले में शिक्षा स्थानीय उद्यमिता को महत्वपूर्ण ढ़ंग से प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए जनगणना 2011 के अनुसार भारत के पूर्वी भाग की साक्षरता दर न्यूनतम, 59.6 प्रतिशत है। यह वह क्षेत्र है जिसमें नई फर्मों का निर्माण न्यूनतम है। वस्तुत: उद्यमिता पर साक्षरता का प्रभाव उस समय अत्यधिक उल्लेखनीय होता है जब यह 70 प्रतिशत से ऊपर हो। छठा, एक जिलें में स्थानीय शिक्षा स्तर और भौतिक अवसंरचना की गुणवत्ता नये फर्मों के सृजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव रखते है। अंत में, वह नीतियां जो व्यापार करने में सुगमता प्रदान करती है और श्रम अधिनियम

जो नये फर्म सृजन में सक्षम हो, विशेषकर विनिर्माण क्षेत्र में। अत: विनिर्माण क्षेत्र में हमारे युवाओं के लिए अपार संभावनाएं हैं और व्यापार सुगमता के बढ़ाने से तथा लचीली श्रम नीति अपनाने से जिलों में और पूरे देश में अधिकतम रोजगार सृजित होंगे। शिक्षा, साक्षारता और भौतिक अवसंरचना अन्य नीतियां है जिसे जिला और राज्य प्रशासन को उद्यम विकास के लिए अपनानी चाहिए जिससे रोजगार और धन सृजन हो सके।

2.1 आर्थिक विकास एवं उत्तरवर्त्ती रोजगार वृद्धि के संदर्भ में उद्यमिता अनेक नीति निर्माताओं के महत्वपूर्ण आकर्षण केंद्रों का प्रस्तुत करती है। उद्यमी उस परिवर्तन के एजेंट के रूप में देखें जा सकते हैं जो अर्थव्यवस्था में नवाचार को गति प्रदान करते हैं। चित्र 1क, विश्व बैंक के ईओडीबी उद्यम आंकड़ें और यूएस सेंसेस ब्यूरो के आंकड़ों को एक साथ प्रयोग करके भारत की नई फर्मों की कुल संख्या की एशिया, यूरोप एवं उत्तरी अमेकिा के देशों के से की गई तुलना यह स्थापित करती है कि भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी उद्यमिता पारिस्थितकीय प्रणाली है। सिर्फ यही नहीं बल्कि औपचारिक क्षेत्र में नई फर्मों की औसत संचयी वृद्धि दर जो 2006-2016 के बीच 3.8 प्रतिशत थी, यह वृद्धिदर 2014-2018 में बढ़कर 12.2 प्रतिशत हो गई। इसके कारण जहां 2014 में 70000 नई फर्में सृजित हुई, उनकी संख्या 80 प्रतिशत की वृद्धि से 2018 में 1,24,000 हो गयी। चित्र 1ख उद्यमिता गहनता के तुल्यता की प्रस्तुती करती है। जिसे प्रति 1000 कामगार नई पंजीकृत निजी स्थापनाओं की संख्या द्वारा परिभाषित किया जाता है। (15-64 वर्ष की आयु वाली जनसंख्या में)

चित्र 1क: विभिन्न देशों की उद्यम संबंधी गतिविधि (नई फर्म) की तुलना

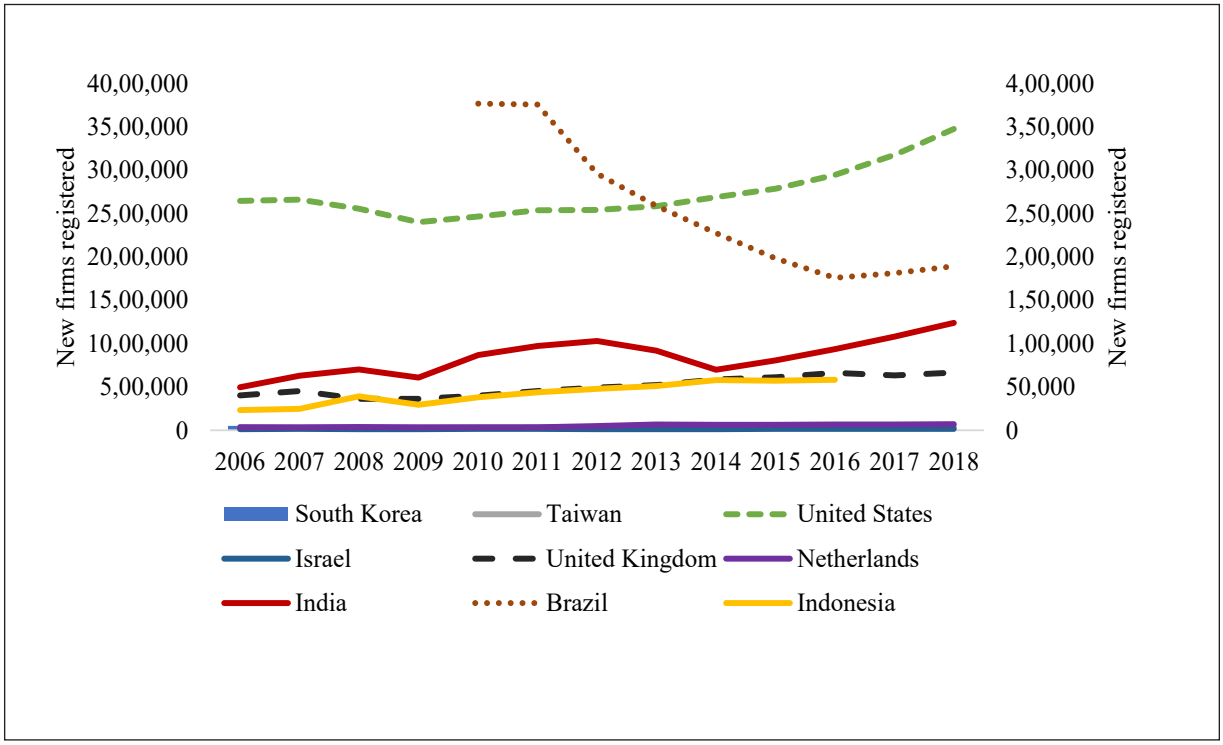

स्रोत: एमसीए-21, विश्व बैंक का ईओडीबी उद्यमिता डाटा यूएस जनसंख्या ब्यूरो एवं समीक्षा परिकलनों की निर्माण सांख्यिकी

टिप्पणी: भारत, ब्राजील एवं इण्डोनेशिया के लिए द्वितीयक अक्ष।

बॉक्स 1: डाटा और कार्यविधि

तीन डाटा स्रोतों के प्रतिच्छन द्वारा प्रतिदर्श की रचना की जाती है। प्रथम, सीईआईसी इंडिया प्रीमियम डाटाबेस से प्रचलित कीमतों पर जिला स्तरीय जीडीपी पर डाटा हासिल किए गये हैं। डाटा संकलन की अवधि वर्ष 2000 की समाप्ति से लेकर 2018 की दर्ज की गई है। इसलिए, भारत के 22 राज्यों में से 504 जिलों की जिला स्तरीय जीडीपी को समाहित करते हुए 5,591 जिला-स्तरीय पर्यवेक्षण किए गए।

उद्यमिता का मापन कारपोरेट मामले (एमसीए) मंत्रालय-21 डाटा में शामिल नई फर्मों के तौर पर किया जाता है, ये डाटा सैट 1990 और 2018 के बीच कारपोरेट मामलों (एमसीए) के मंत्रालय में पंजीकृत सभी सक्रिय फर्मों की एक साथ सूचना उपलब्ध कराता है। उसके बाद एमसीए-21 में फर्मों के पंजीकृत कार्यालयों के पते का उपयोग करते हुए जिले की प्रत्येक फर्म का मिलान किया जाता है। इन डाटा के उपयोग के द्विगुणित निहितार्थ होते हैं। पहले, उद्यमिता का हमारा मापन, सामान्य अर्थव्यवस्था में प्राइवेट कारपोरेट सैक्टर तक सीमित है और इसमें उन स्थापनाओं को शामिल नहीं किया जाता जो मौजूदा कंपनियों का प्रसार हो। दूसरे, चूंकि ये डाटा एमसीए के साथ पंजीकृत सक्रिय फर्मों की एक साथ समग्र सूचना होती है, कम से कम एक परिसीमा जो अधिरोपित की जाती है वह यह है कि 2018 तक जो फर्म सक्रिय नहीं थी उस का पता नहीं लगाया जा सकता। हमारे डाटा में यह सर्वेक्षक रूझान यह भी सूचित करता है कि उद्यमिता के बारे में प्राक्कलन उर्ध्वगामी पक्षीय हो सकता है।

तृतीय, किसी भी जिले की भौतिक और सामाजिक अवसंरचना से संबंधित डाटा, भारत के सामाजिक-आर्थिक उच्च दृष्यित ग्रामीण शहरी भौगोलिक डाटासैट से संचित किए जाते हैं। और इनमें (एसएचआरयूजी, http://www.devdatalab.org./shrug_download पर उपलब्ध) चारों का एक सेट शामिल है जिसमें भारत की सामाजिक आर्थिक विकास के स्तर का उल्लेख किया गया है। अन्य बातों में, एसएचआरयूजी में वे चर शामिल हैं जो वर्ष 1990 से 2018 के बीच प्रत्येक जिले के जनसांख्यिकीय, सामाजिक आर्थिक, फर्म एवं राजनैतिक आधारित संरचना की व्याख्या करते हैं। इन्हें विभिन्न डाटा स्रोतों से एकत्रित किया गया है। इन स्रोतों के वर्ष 1991, 2001, 2011 सामाजिक आर्थिक जातिगत जनगणना, 2012, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, (पीएमजीएसवाई) सार्वजनिक डाटा शामिल किए गए हैं ताकि उन संकेतकों की रचना की जा सके जो भारत के प्रत्येक जिले के सामाजिक एवं भौतिक आधारित संरचना की व्याख्या करते हैं।

अन्य देशों से तुलना के लिए हम उद्यमिता विश्व बैंक के ईओडीवी उद्यमिता आंकड़ों का प्रयोग संयुक्त राष्ट्र को छोड़कर सभी देशों के लिए करते हैं। संयुक्त राष्ट्र (यूएस) हेतु यूएस संसेक्स ब्यूरो के व्यापार स्थापना सूचकांक (बीएफएस) का प्रयोग करते है।

2.2 प्रति व्यक्ति के आधार पर भारत की औपचारिक अर्थव्यवस्था में उद्यमिता दरें निम्न हैं। वर्ष 2006 से 2016 के बीच प्रति 1000 कामगार प्रति वर्ष पंजीकृत नई फर्मों की औसत माध्यिका संख्या 0.10 (0.11) थी। इसके विपरीत इंगलैंड एवं अमेरिका की औसत माध्यिका उद्यम तीव्रता क्रमशः 12.22 (11.84) एवं 12.12 (11.81) थी। सामान्य रूप में, विकसित अर्थव्यवस्थाओं की उद्यम तीव्रता सार्थक दृष्टि से ऊंची हैं। ब्राजील, जिसमें वर्ष 2010 से 2018 के बीच महत्वपूर्ण गिरावट देखी गई है, को छोड़कर यह सभी देशों में वृद्धि की ओर अग्रसर है। यह उल्लेख करना आवश्यक है कि अन्य देशों की तुलना में, भारत के काफी अधिक उद्यम अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में प्रचालित होते है, जिनका आंकड़ा इनमें शामिल नहीं किया गया है। उद्यम तीव्रता को सापेक्ष निम्न दरें होते हुए भी चित्र 2क में समय के साथ-साथ नई फर्मों के निर्माण में महत्वपूर्ण वृद्धि दर पायी गई है। चित्र 2ख यह दर्शाता है कि सेवा क्षेत्र में यह वृद्धि विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यह दर्शाता है कि भारत की नई आर्थिक संरचनाओं में सेवा क्षेत्र को तुलनात्मक लाभ प्राप्त है।

उद्यमिता एवं जीडीपी

2.3 उद्यम क्रियाकलाप आर्थिक संवृद्धि से संबन्धित है। इस संबंध के प्राक्कलन के विवरण बॉक्स 2 में देखें।

2.4 चित्रः 3क तीन वर्ष पूर्व के केंद्रित जिले में स्थापित नई फर्मों के प्राकृतिक लॉग पर सकल घरेलू जिला उत्पाद (जीडीडीपी) के प्राकृतिक लॉग की प्रतीपगमन के लिए प्रवृत्ति रेखा एवं प्रकीर्ण चित्रांकन को प्रस्तुत करता है। विशेष रूप में प्रति जिले में नई फर्मों के पंजीकरण में 10 प्रतिशत की वृद्धि से जीडीडीपी में 1.8 प्रतिशत वृद्धि होती हैं यह परिणाम इस बात पर बल देते

चित्र 2क: समय के साथ-साथ नई फर्मों में वृद्धि

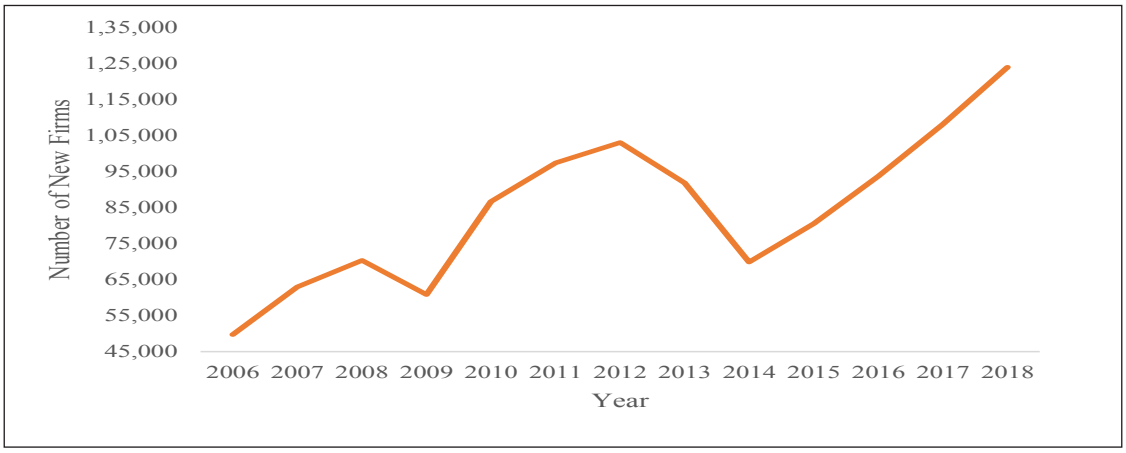

चित्र 2ख: समय के साथ नई फर्मों की क्षेत्र-वार वृद्धि

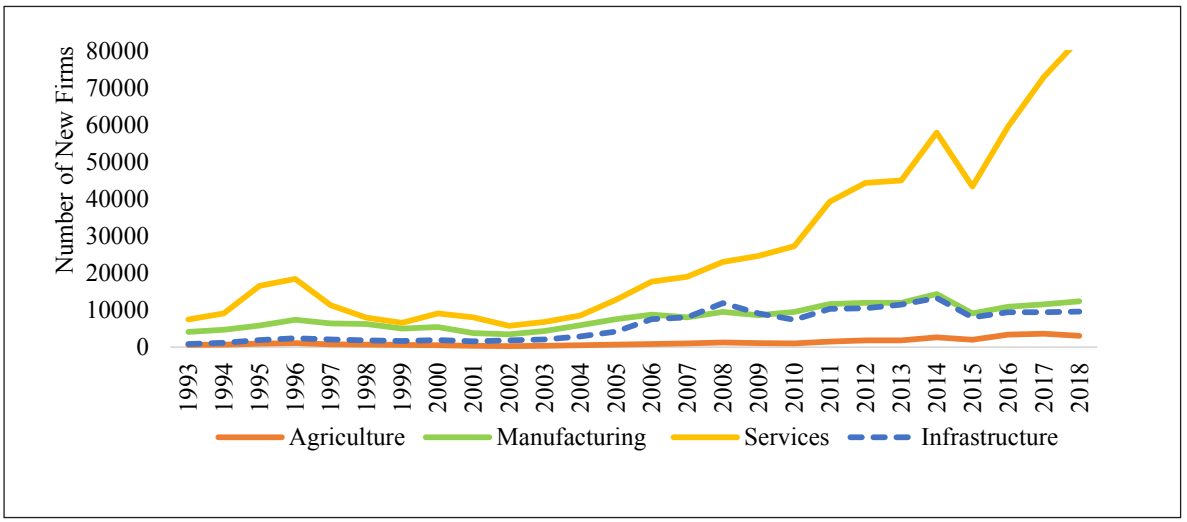

स्रोत: एमसीए-21 और समीक्षा गणनाएं

बॉक्स 2: उद्यमिता एवं जीडीपी के बीच संबंध का आकलन

जिले में नई फर्मों की संख्या के अनुसार जिले की जीडीपी किस प्रकार परिवर्तित होती है, इसका पता लगाने के लिए हमने ओएलएस विनिर्देशन का क्रियान्वयन किया जो स्वतंत्र रूप में नई फर्मों की संख्या (प्राकृतिक लॉग में वर्तमान कीमतों पर) को जिले की जीडीपी (प्राकृतिक लॉग में चालू कीमतों पर) का प्रतीपगमन आकलन किया है। हमारे आमुख में कहा गया है कि आधारिक संरचना एवं पर्यावरण संबधी अतंर मुख्यत: राज्य-वार परिवर्तित होते हैं, 17 समय आभासीचरों के साथ 21 राज्यों के निश्चित प्रभावों का प्रयोग किया गया है। इस संभाव्यता को न्यूनतम करने के लिए कि नई फर्मों की संख्या जिला स्तरीय जीडीपी की अंतर्जात है, जिले की नई फर्में की पूर्व की संख्या तीन वर्ष का प्रयोग किया गया है। सारांश अनुमानित संबंध समीकरण इस प्रकार है:

$$In\,(District\ GDP_{it}) = \alpha + \beta\left(new\ firms_{i,t-3}\right) + X_i + \tau_t + \varepsilon_{it} \qquad (1)$$

उपर्युक्त 1 में i एवं t ज क्रमश: जिले एवं वर्ष का संकेत देती है, गप राज्य निर्धारित प्रभावों को तथा Tt वर्षानुगत स्थिर प्रभावों को निरूपित करता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि मानक त्रुटियां अधिवर्धित नहीं हो जाए, हमने जिला स्तर पर त्रुटियों को संगुछन कर लिया है।

हैं कि उद्यमिता का महत्व भारत की आर्थिक वृद्धि एवं परिवर्तन के इंजिन के रूप में है। चित्र 3ख: नये फर्मों की स्थापना में स्थानिक विसर्जन को दर्शाता है। हम यह पाते हैं कि प्राथद्वीप राज्यों का नये फर्मों के प्रवेश में प्रभुत्व है और उद्यमशीलता केवल कुछ महानगरों की ही सीमित नहीं है बल्कि यह पूरे भारत में विखरा हुआ है।

चित्र 3क: जीडीपीपी पर उद्यम सम्बंधी कार्यकलाप के प्रभाव का अनुमान

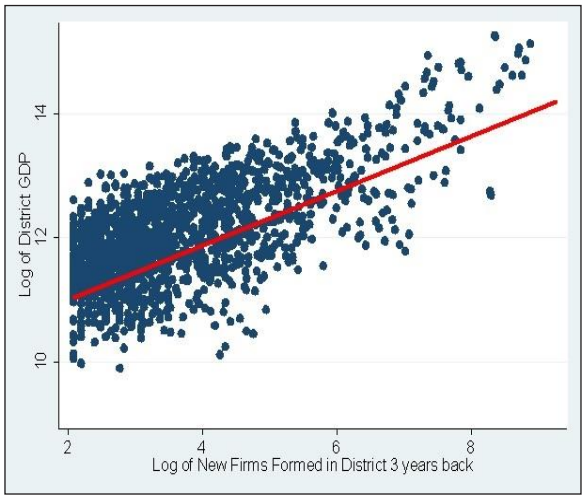

स्रोत: एमसीए-21 और समीक्षा गणनाएं

उद्यम क्रियाकलाप में स्थानिक - विविधता

2.5 चित्र 4क जो सेक्टर द्वारा उद्यम क्रियाकलाप के प्रधात के प्राक्कलन के लिए गुणांक प्लाट को दर्शाता है, दर्शाता है कि नइ फर्म प्रवेश का प्रभाव विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्रों में सबसे अधिक है। निष्कर्ष इस बात पर बल देते हैं कि उद्यमिता आगामी दशकों में भारत की आर्थिक

चित्र 3ख: क्षेत्र द्वारा उद्यम सम्बन्धी कार्यकलाप के प्रभाव में भिन्नताएं।

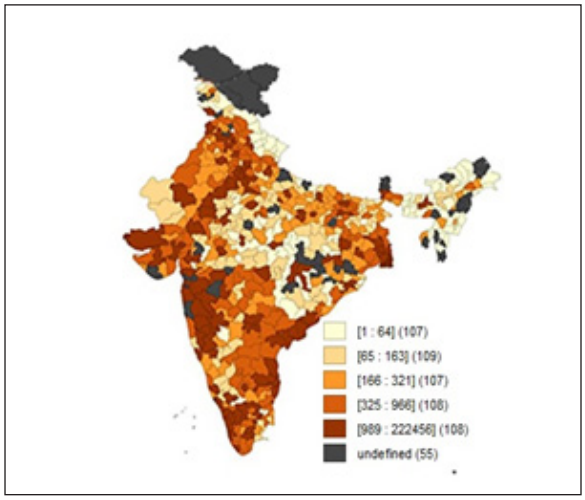

प्रगति में महत्वपूर्ण भमिका अदा कर सकती है। यह उस दृष्टिकोण को खारिज करता है कि भारत में उद्यम क्रियाकलाप सिर्फ प्रेरक और रोजगार चुनावों की कमी के कारण नहीं है। बल्कि परिणाम यह दर्शातें है कि आगामी दशक में औपचारिक क्षेत्र में उत्पादकता और संवृद्धि निर्देशित उद्यम क्रियाकलाप महत्वपूर्ण होंगे। अन्य अनुत्पादक क्षेत्रों एवं निर्वाह उद्यमिता क्षेत्र से व्यवस्थित विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र में श्रम के संचलन से भारत के उत्पादकता अतंरालों को समाप्त करने में मदद मिल सकती है। जब तक समान आकार की अर्थव्यवस्थाओं के सापेक्ष विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र अविकसित रहेंगे, तब तक व्यापक उद्यम क्रियाकलाप इन अंतरालों को समाप्त करने में मददगार साबित होंगे।

2.6 नीचे दिया गया चित्र 4ख भारत में चार क्षेत्रों के लिए उद्यम संबंधी कार्यकलापों में समय के अनुसार वृद्धि दर्शाता है पूर्वी क्षेत्रों को छोड़कर बाकी सभी क्षेत्र समयोपरांत उद्यम क्रियाकलापों में मजबूत वृद्धि दर्शाते हैं उद्यम-संबंधी कार्यकलाप के स्तर की परवाह किए बिना सभी क्षेत्र उद्यम तथा उद्यम के व्यापक लाभ से परिचय कराने वाले जीडीडीपी के मध्य मज़बूत सम्बन्ध को दर्शाते हैं।

2.7 फिर प्रत्येक जिला क्षेत्र के लिए एक सूचक का आंकलन किया जाता है जो यह दर्शाता है कि उस क्षेत्र की उद्यमिता क्षमताएं विभिन्न जिलों में किस प्रकार विभाजित है। किसी भी क्षेत्र के लिए यह सूचक उस क्षेत्र में स्थापित नई फर्मों में संबद्ध जिले का अंश और जिले में स्थापित सभी नई फर्मों का अनुपात होता है। उदाहरण के लिए यदि एक जिले में कृषि क्षेत्र की 20 प्रतिशत नई फर्में स्थापित करने की जिम्मेदारी थी, किन्तु सभी स्थापित नई फर्मों में से केवल 10 प्रतिशत

चित्र 4क: समय के साथ क्षेत्रों में नई फर्मों में वृद्धि

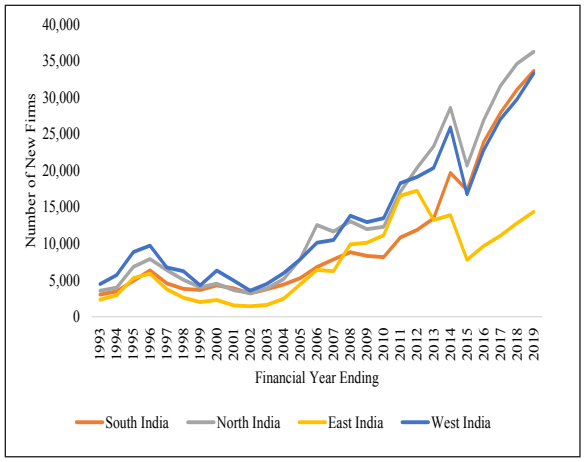

चित्र 4(ख) क्षेत्रों वार उद्यमिता गतिविधियों के प्रभाव में अंतर

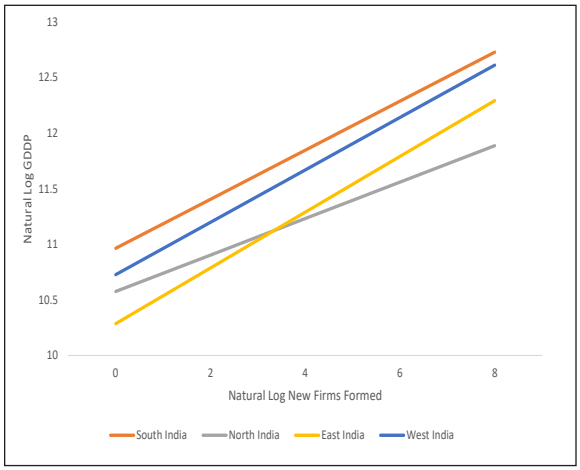

स्रोत: एमसीए-21 और समीक्षा गणनाएं

चित्र 5(क) कृषि क्षेत्र में विभिन्न जिलों की सापेक्ष उद्यमिता क्षमता

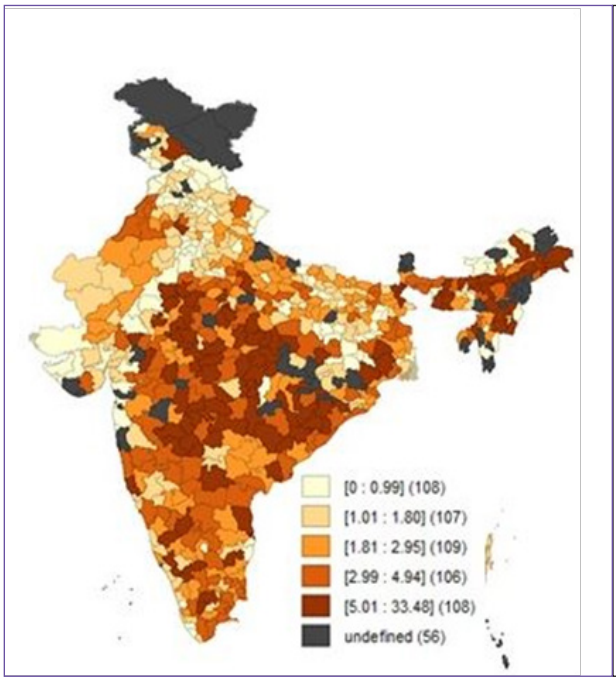

चित्र 5(ख) विनिर्माण क्षेत्र में विभिन्न जिलों की सापेक्ष उद्यमिता क्षमता

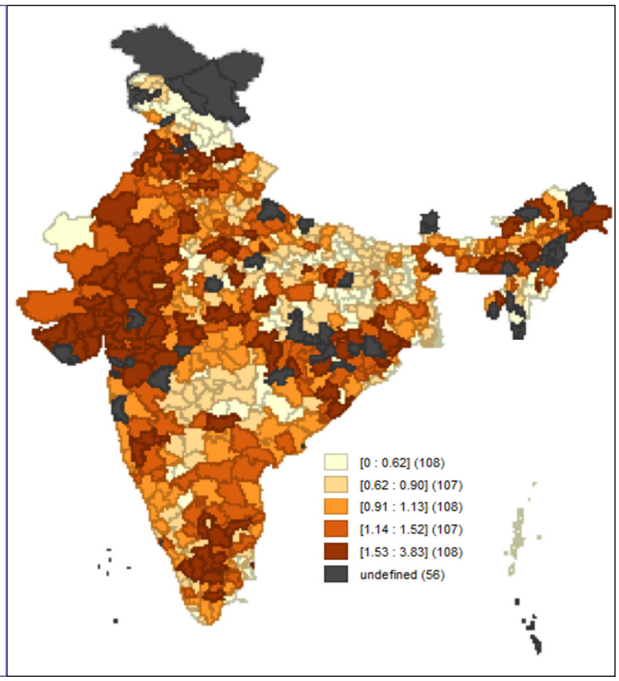

को यह मान 2 कृषि क्षेत्र में सापेक्ष उद्यम क्रियाकलाप का एक सूचक तो यह उस क्षेत्र की सापेक्ष शक्ति को दर्शाता है। चित्र 5क से 5घ क्रमशः कृषि, विनिर्माण, सेवा और अवसंरचना के सूचकों के जिलेवार सापेक्ष वितरण दिखा रहे हैं।

2.8 चित्र 5 क बताता है कि विनिर्माण, सेवाओं तथा अवसंरचना, की उद्यमी क्षमताओं की भाति कृषि उद्यमी क्षमताओं में भौगोलिक रूप में स्थानीय नहीं है और यह देश भर में समान रूप से वितरित है। कृषि क्षेत्र से सम्बन्धित उद्यमी कार्यकलाप के उच्चतम क्विन्टाइल राज्य मनिपुर, मेघालय, मध्य प्रदेश, असम, त्रिपुरा तथा

चित्र 5(ग) सेवा क्षेत्र में विभिन्न जिलों की सापेक्ष उद्यमिता क्षमता

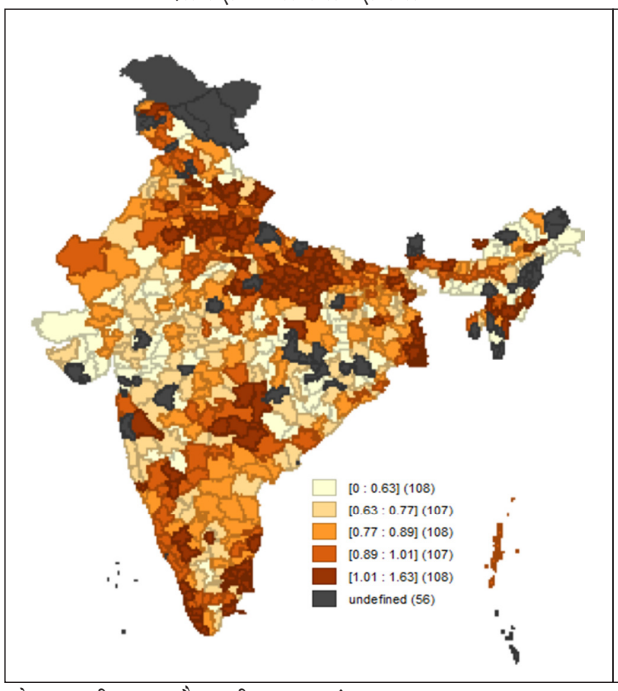

चित्र 5(घ) बुनियादी ढांचों में विभिन्न जिलों की सापेक्ष उद्यमिता क्षमता

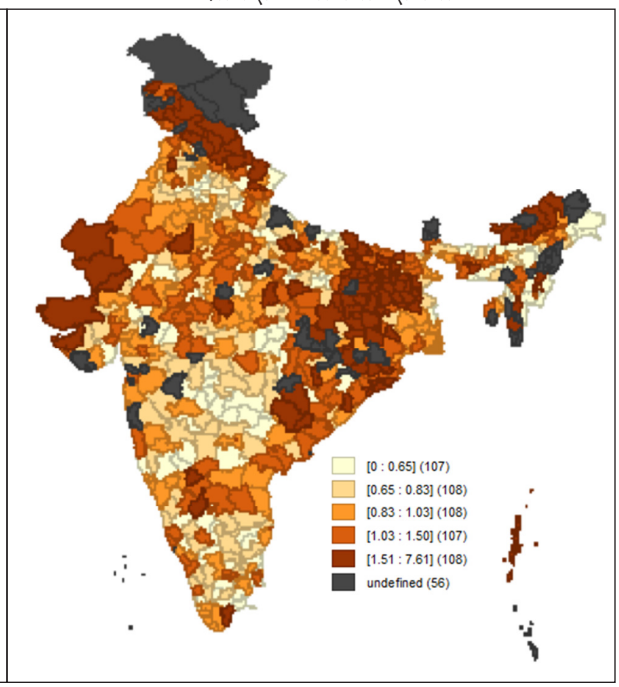

स्रोत: एमसीए-21 और समीक्षा गणनाएं

उड़ीसा हैं। उत्तर-पूर्व में स्थापनाएं खाद्य व्यापार में सम्भवत: निजी उद्यमों के हाथ में होंगी जैसे कि जैविक उत्पाद तथा चाय के बाग़ान। यद्यपि मध्य प्रदेश तथा उड़ीसा में स्थापनाओं की बहुलता किसान उत्पादक कम्पनियां हैं, जो सहकारी समितियों तथा निजी लिमिटेड कम्पनियों के मिश्रित स्वरूप की अभिकल्पना करती हैं और बाजार में किसानों में सौदेबाजी की ताकत में सामूहिक रूप से सुधार करती हैं।

2.9 आंकड़ा 5ख सुझाता है कि गुजरात, मेघालय, पुदुचेरी, पंजाब तथा राजस्थान में विनिर्माण क्षेत्र में उद्यमी कार्यकलाप उच्चतम हैं। गुजरात राज्य में विनिर्माण क्षेत्र में सर्वाधिक उद्यमी कार्यकलाप वाले जिले सुरेन्द्रनगर, राजकोट, भावनगर तथा सूरत हैं। इन क्षेत्रों में स्थापनाएं टैक्सटाइल, रसायन, धातु, प्लास्टिक तथा दवा निर्माण पर केन्द्रित हैं। प्रत्येक क्षेत्र में इन स्थापनाओं द्वारा (गनी और अन्य 2011) के शोध में प्रमाणित भारतीय विनिर्माण क्षेत्र के संदर्भ में समूहन की अर्थव्यवस्थाओं की पुष्टि होती है। यह आगत तथा उत्पाद के लिए परस्पर निर्भर औद्योगिक संरचनाएं हैं तथा किसी क्षेत्र में विशिष्ट श्रमिक उस उद्योग-क्षेत्र में उच्चतम उद्यम कार्यकलाप से मजबूती से जुड़े हुए हैं।

2.10 विनिर्माण क्षेत्र में स्थान विषयक विविधता नीति की आवश्यकता पर जोर डालती है जो व्यापार करने की सुगमता में सुधार करती है। यह उल्लेखनीय है कि इस क्षेत्र में उद्यमी कार्यकलाप के उच्चतम क्विन्टाइल में तीन क्षेत्र गुजरात, पंजाब तथा राजस्थान पूर्व आर्थिक समीक्षा में लचीले श्रम कानूनों वाले राज्यों के रूप में वर्गीकृत थे। इसके अतिरिक्त, वे जहां श्रम कानून लचीले नहीं हैं, ऐसे राज्य जैसे पश्चिम बंगाल, असम, झारखण्ड, केरल तथा बिहार उद्यमी कार्यकलाप के न्यूनतम क्विन्टाइल में वर्गीकृत थे। वैसे गुजरात के श्रम सुधार को कामगार हितैषी के रूप में देखा जाता है। राज्य ने अन्य विनियमों को भी पारित कर दिया है जो अनुवृत्ति भार में कटौती, अनुमोदन की पारदर्शी तथा समयबद्ध प्रक्रिया तथा नवीकरण आवेदनों के साथ-साथ व्यापार करने की सुगमता तथा अन्य के बीच विनिर्माण लाइसेंस को स्वीकार करने तथा नवीकरण के लिए निर्धारित समय सीमा के में कटौती को सुदृढ़ करता है।

राजस्थान ने भी बहुत से सुधार किए हैं जो कि नियोक्ता हितैषी के रूप में देखे जाते हैं। उदाहणार्थ, व्यापार संघ के प्रभाव को कम करने के लिए राज्य ने संघ बनाने के लिए पूर्व में 15% से बढ़कर स्थापना में कुल श्रमशक्ति के 30% के रूप में न्यूनतम सदस्यता आवश्यकता बढ़ा कर संघ निर्माण की लागत को बढ़ाया है। इसी तरह, राज्य ने कहा है कि 100 कामगारों की पूर्व सीमा से बढ़कर 300 लोगों तक रोजगार देने वाली कंपनियों में संघों की छंटनी अथवा बंद करने के लिए पूर्व संघो से अनुमोदन की आवश्यकता नहीं है। कामगार केवल तीन वर्ष की अवधि के भीतर भी गलत तरीके से सेवा समाप्ति पर आपत्ति उठा सकता है प्रति वर्ष नई कंपनियों की माध्य संख्या में अंतर तथा प्रति वर्ष नई विनिर्माण कंपनियों की माध्य संख्या में लचीले श्रम कानूनों वाले राज्यों तथा कठोर श्रम कानूनों वाले राज्यों के बीच अंतर क्रमश: चित्र 6क एवं 6ख में प्रस्तुत किया गया है।

2.11 विनिर्माण क्षेत्र में उद्यमी गतिविधियों के उच्चतर आर्थिक योगदान को देखते हुए यह उन नीतिगत उत्तोलकों पर विचार करने के लिए राज्यों हेतु महत्वपूर्ण है जोकि इन अपेक्षाकृत अधिक उत्पादक स्थापनाओं को कम उत्पादक क्षेत्र तथा अनौपचारिक क्षेत्र में निर्वाह गतिविधियों से श्रम का गमन सुकर बनाते हैं।

2.12 चित्र 5ग सुझाता है कि सेवा क्षेत्र में उद्यमी गतिविधि दिल्ली, मिजोरम, उत्तर प्रदेश, केरल, अंडमान निकोबार तथा हरियाणा के क्षेत्रों में सबसे अधिक है। पूर्व अनुसंधान (घानी एवं अन्य) के अवलोकन से संगत, इन क्षेत्रों में स्थापनाओं का स्वरूप संकुलन की मितव्ययता नहीं दिखा रहा है तथा यह विविध उद्योगों में जैसे कि व्यापार, वित्तीय सेवाएं, पर्यटन, एवं मेजबानी सेवाएं, खुदरा बिक्री, तथा धार्मिक संघटन एवं मिशनों में फैला है।

चित्र 6(क): गैर शिथिलनीय और शिथिलनीय राज्यों के बीच नई स्थापित फर्मों की तुलना

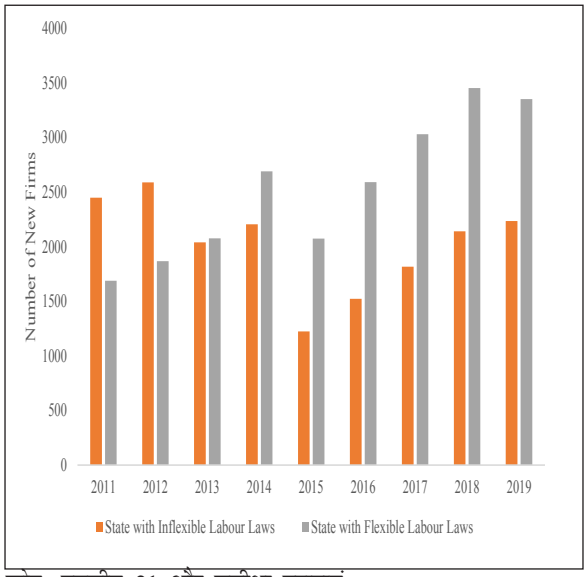

चित्र 6(ख): शिथिलनीय और गैर-शिथिलनीय राज्यों के बीच नई स्थापित विनिर्माण फर्मों की तुलना

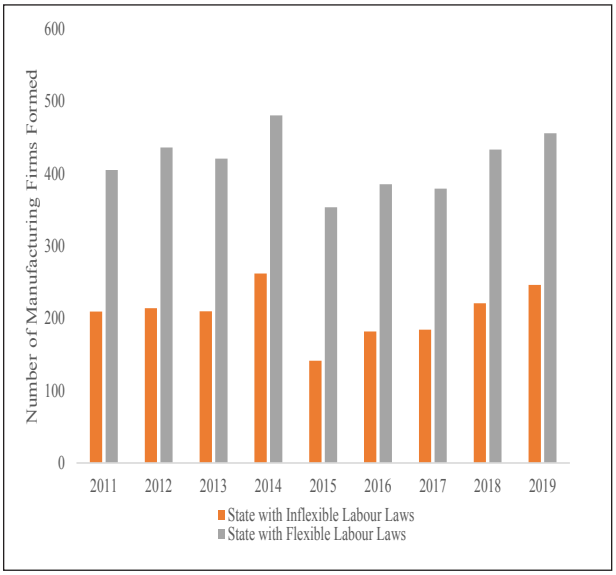

स्रोत: एमसीए-21 और समीक्षा गणनाएं

2.13 चित्र 5घ सुझाता है कि अवसंरचना क्षेत्र में उद्यमी गतिविधि झारखंड, अरूणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, मिजोरम, जम्मू एवं कश्मीर तथा बिहार के राज्यों में सबसे अधिक है जिनमें से कुछ विद्यमान अवसंरचना के खराब स्तर के लिए जाने जाते है। निस्संदेह, इन राज्यों में अधिकतर नई कंपनियां निर्माण, संभारिकी एवं

परिवहन, सुविधा सृजन, पारेषण एवं वितरण, वैकल्पिक ऊर्जा वितरण, एवं इंफ्राटेक में लगी हुई है।

2.14 जिलों में उद्यमी गतिविधि का स्वरूप महत्वपूर्ण रूप से जिले में बेरोजगारी से सहसंबंधित है। आवधिक श्रम सर्वेक्षण (पीएलएफएस) आंकड़ो द्वारा यथा, मापी गई, कृषि एवं विनिर्माण क्षेत्र उद्यमी गतिविधि राज्यों में बेरोजगारी की दर के साथ क्रमशः -0.26 तथा -0.29 के सह संबंध हैं। इसके विपरीत, सेवाएं एवं अवसंरचना क्षेत्र में उद्यमी गतिविधि राज्यों में बेरोजगारी से क्रमशः 0.36 एवं 0.09 के सकारात्मक स्थानिक सहसंबंध पाए गए है। ये अनुमान विशेषकर प्रमुख है क्योंकि सेवा क्षेत्र (14.475) में एकल व्यक्ति नई कंपनियों की गतिविधि की संख्या अन्य सभी तीनों क्षेत्रों में संयुक्त (2785) से पांच गुणा अधिक है। जीडीपी में उद्यमी गतिविधि की इस श्रेणी का योगदान भी महत्वहीन है। अतः कंपनियों के इस वर्ग के निष्पादन एवं उत्पादकता सुधारने के नीतियां सुझाने वाला शोध कार्य बहुत महत्वपूर्ण होगा। बेरोजगारी दर के साथ विनिर्माण में उद्यमी गतिविधि तथा संपूर्ण उद्यमिता के बीच सहसंबंध नीचे चित्र 7 में प्रस्तुत किया गया है।

चित्र 7: संपूर्ण उद्यमी गतिविधि और विनिर्माण उद्यमी गतिविधि के बेरोजगारी से सहसंबंध

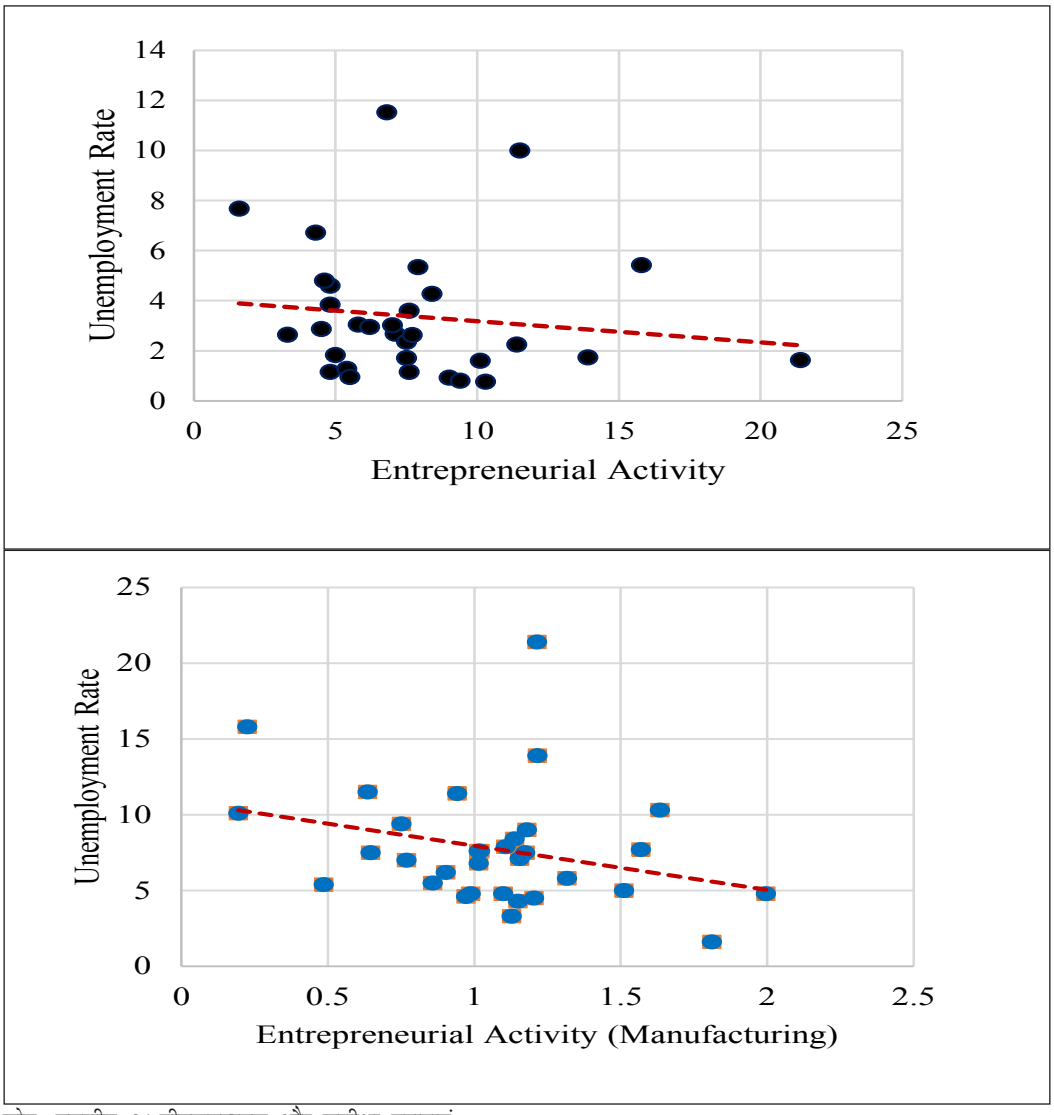

स्रोतः एमसीए-21,पीएलएफएस और समीक्षा गणनाएं

उद्यमी गतिविधि के निर्धरक तत्व

2.15 स्वाभाविक प्रश्न जो कि प्रमुख स्थानिक विविधता के प्रलेखीकरण का अनुपालन करता है कि कौन से घटक हैं जो ऐसी विविधता को बढ़ाते हैं। इस तरह, इस संदर्भ में (बाक्स 3 देखें) अनुसंधनों के निष्कर्ष को सारांशित किया गया है तथा तदुपरांत भारत में नई कंपनियों के प्रवेश के चालक की जांच की गई है। बहरहाल पूर्व अनुसंधान नई कंपनियों के जन्म में स्थानीय जनसंख्या विशेषताओं, जिला स्तरीय परिस्थितियों तथा सामूहिक अर्थव्यवस्था को समाहित करते हैं, यह विश्लेषण जिला स्तरीय परिस्थितियों तक सीमित है जो कि सरकार हेतु महत्वपूर्ण नीतिगत उत्तोलक का प्रतिनिधित्व करता है।

2.16 जिला स्तरीय विशेषताओं के दो प्रमुख समुच्चय पर ध्यान केन्द्रित करना है जोकि जिला सामाजिक एवं वास्तविक अवसंरचना में उद्यमी गतिविधि के स्तर को आगे बढ़ाते हैं। हालाकि ये पूरी सूची का निर्माण नहीं करती है। ये भारत में उद्यमिता एवं आर्थिक विकास पर पूर्व अनुसंधान में वृहत्त रूप से प्रमुख रूप से प्रस्तुत की गयी है। जिले में सामाजिक अवसंरचना के ये उपाय जिले में सामान्य शिक्षा स्तर से अधिक संबंध रखते हैं। जिले में उच्चतर शिक्षा स्तर बेहतर मानव पूंजी के विकास को समर्थ बनाते हैं जो कि विचार एवं उद्यमी की बढ़ी आपूर्ति से संबंध रखता है। अत: यह अनुमानित है कि बेहतर शिक्षा वाले जिलों में उच्चतर उद्यमी गतिविधि होगी। जिले में महाविद्यालयों की संख्या तथा साक्षर जनसंख्या का अनुपात जिले में शिक्षा अवसंरचना मापने के लिए उपयोग किया जाता है।

2.17 भौतिक आधारिक संरचना के उपायों में भौतिक संयोजकता के साथ-साथ जिले में मूलभूत भौतिक आधारित संरचना तक पहुंच शामिल है जो ज्यादातर मामलों में जिले की आधारिक संरचना को साथ लेकर चलती है। एक जिले में भौतिक आधारित संरचना की पहुंच को जिले में पक्की सड़कों के अनुपात द्वारा मापा जाता है। यह उपाय बिजली, पानी/स्वच्छता सुविधाओं, और दूरसंचार सेवाओं जैसे अन्य सार्वजनिक वस्तुओं तक पहुंच के साथ सहसंबंधित है, जो सभी व्यवसायों के लिए मौलिक है। भौतिक संयोजकता को ऐसे जनसंख्या केंद्र से औसत दूरी के रूप में मापा जाता है जिसमें कम से कम 500,000 लोग होते हैं। बड़े जनसंख्या केंद्रों के निकटता से स्टार्टअप को बाजार तथा मापक संचालक में विस्तार करने की अनुमति मिलती है। इसलिए, यह उम्मीद की जाती है कि ये दोनों उपाय उद्यमशीलता की गतिविधि के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करेगी। बॉक्स 4 उस जिले में उद्यमशीलता की गतिविधि पर उस जिले की भौतिक और सामाजिक आधारिक संरचना के प्रभाव के आकलन के लिए कार्यप्रणाली का सार प्रस्तुत करता है।

2.18 जैसा कि उम्मीद की गई थी जिला में साक्षर जनसंख्या में वृद्धि में होने से उद्यमशीलता क्रियाकलापों में वृद्धि होती है जो नई फर्मों की संख्या द्वारा मापी जाती है। चित्र 8क दर्शाता है कि नई फर्म की स्थापना में जो वृद्धि का नतीजा है। सर्वाधिक वृद्धि तब देखी गई जब साक्षरता दर 72 प्रतिशत तक बढ़ी। यह दर्शाता है कि साक्षरता दर की वृद्धि में कमी कोई मायने नहीं रखती। बावजूद इसके, साक्षरता में सबसे अधिक वृद्धि

बॉक्स 3: उद्यमी गतिविधि के प्रचालकों विषयक अनुसंधान का सार

यह अध्ययन जिला स्तरीय स्थिति पर ध्यान केन्दित करता है विशेष रूप से सामाजिक तथा भौतिक आधारितक संरचना पर, जो विशेष रूप से उद्यमी गतिविधि को बढ़ावा देते हैं। तथापि पूर्व शोध कार्य के समृद्ध संकलन उद्यमी गतिविधि में विषमता के अन्य स्थानिक और औद्योगिक चालक कारकों की भूमिका पर जोर देता है। इनमें जनसंख्या की विशेषताएं, अन्य जिला स्तरीय परिस्थितियां, विनियामक ढांचे तथा संकुलन की मितव्ययताएं शामिल है। ये कारक अवसर, कौशल तथा उद्यम में उपलब्ध संसाधनों, फर्म सृजन तथा संवृद्धि (मिटेवस्टेड तथा केरी 2008) को प्रभावित करते हैं।

जनसंख्या का आकार और घनत्व जैसी स्थानीय जनसंख्या विशेषताओं की भूमिका विशेष रूप से नई फर्मों के लिए मुख्य है, जहां स्थानीय बाजारों को फर्म के प्राथमिक उत्पाद बाजार माना जाता है और जहां अधिकांश उद्यमी अपने निवास के क्षेत्र में अपना व्यवसाय शुरू करना चाहते है। (डाहल और सोरेंसन 2007)। ऐसे मामले में, क्षेत्र का आकार स्थानीय बाजार के आकार और कुछ हद तक, उद्यमियों और प्रबंधकों की संभावित आपूर्ति को दर्शाता है। जनसंख्या घनत्व स्थानीय संसाधनों और उच्च संसाधन लागत

(उदाहरणत: मजदूरी और भूमि किराया) (गनी एट अल. 2011) के लिए प्रतिस्पर्धा जैसे अन्य संचालित मापदंडों को भी प्रभावित करता है। कुछ अध्ययन (कार्लिनो एट अल. 2007); अर्जनी और हेंडरसन 2008) सशक्त ज्ञान प्रवाह के घनत्व को भी महत्वपूर्ण बताते हैं, जो उद्यमशीलता की गतिविधि पर एक आनुभाविक सवाल को प्रभावित करते हैं। शोधकर्ताओं (इवांस और लियटन 1989; बोनेट एट अल. 2009; ग्लेशियर और केर 2009) ने क्षेत्रीय आयु संरचना और उद्यमशीलता दर के बीच एक विलोम-यू-संबंध का प्रदर्शन किया है जो भारत के ''जनसांख्यिकीय लाभांश'' को दर्शाता है, जो इसे उद्यमिता के एक महत्वपूर्ण चालक के रूप में स्थापित करता है।

जब भौतिक आधारित संरचना और शिक्षा में जिला-स्तर के निवेश पर विचार किया जाता है, डिजिटल साक्षरता और प्रौद्योगिकी और वित्त तक उद्यमियों की सुलभ पहुंच जैसी अन्य विशेषताएं उद्यमशीलता को बढ़ावा देने और नए उपक्रमों की उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा बढ़ाने के लिए भी महत्वपूर्ण है। (इस साहित्य और केस अध्ययन की समीक्षा के लिए मित्तल और सेरी 2008 और गनी एट अल. 2011 देखें) वित्त में बाधाएं, विशेष रूप से जोखिम पूंजी (बनाम विकास पूंजी) तक पहुंचने में कठिनाई, अक्सर छोटे और सूक्ष्म फर्मों (मेकी 2019) पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं।

इस क्षेत्र में विनियामक ढांचे द्वारा भी उद्यमशीलता की गतिविधि बाधित हो सकती है जो प्रवेश और निकास सीमित प्रतिस्पर्धा और अनुपालन और प्रशासन की लागत में वृद्धि (समीक्षा के लिए ओईसीडी (1998) द्वारा उद्यमिता को बढ़ावा देना से संबंधित अध्ययन को देखें) द्वारा इसे बाधित कर सकता है। इस संदर्भ में पूर्व अनुसंधान द्वारा जिन प्रमुख मापदंडों को निहित किया गया है उनमें प्रवेश, प्रतिस्पर्धा नीति, दिवालियापन कानून, कर बोझ, प्रशासनिक और अनुपालन लागत और बौद्धिक संपदा अधिकारों के संरक्षण के लिए विनियामक बाधाएं शामिल हैं।

जिला-स्तर की परिस्थितियों के अलावा, जो सभी उद्योगों को समान रूप से प्रभावित करती हैं, इन परिस्थितियों और विशिष्ट उद्योगों के बीच पारस्परिक क्रियाएं सिद्धांतों संकुलन (मार्शल 1920; ग्लेशियर और केर 2009) के रूप में मौजूद हैं। भारत के संदर्भ में ग़नी एट अल. (2011) विनिर्माण में संकुलन की मितव्ययताओं के काफी सबूत पाए जाते हैं जो फर्मों के बीच आदान-उत्पादन संबंधों पर जोर देते हैं।

ये सभी कारक प्रमुख तरीकों को दर्शाते हैं जिनमें नीति निर्माता उद्यमशीलता गतिविधि के स्थानिक वितरण को प्रभावित करते हैं।

बॉक्स 4: उद्यमशीलता के प्रचालकों का अनुमान

जिला में और एक बार ओएलएस प्रतिमान का उपयोग करते हुए उद्यमशीलता के प्रचालकों का पता लगाने के लिए जिले में पक्की सड़कों द्वारा जुड़े हुए गांवों का अनुपात साक्षर नेपेरियन, निकटतम जनसंख्या केन्द्र से जिले की दूरी, जिसकी जनसंख्या कम से कम 5,00,000 हो (नेपेरियन लॉग में दूरी) और जिले में महाविद्यालयों की कुल संख्या (नेपेरियन लॉग में महाविद्यालयों की संख्या) वर्ष ज में जिला प में नई फर्मों पर प्रतीपगमन है।

हमारे सभी आकंलित किया गया है के कारक हालिया जनगणना पर आधारित है अैर जिले में जनसंख्या के घनत्व के (नेपेरियन लॉग में जनसंख्या का घनत्व)। नीचे समीकरण (2) में निरूपण नई फर्मों की संख्या संबंधी सामाजिक एवं भौतिक अवसंरचना के भिन्न पहलुओं के प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है:

$$\begin{aligned}\ln\left(newfirms_{it}\right) = \alpha + \beta_1 \ln\left(roads_{it}\right) \\ + \beta_2 \ln\left(colleges_{it}\right) + \beta_3 proportion\,literate_{it} \\ + \beta_4 proportion\,connected_{it} + X_i + {}^2{}_5 \ln\left(population\,density_{it}\right) \\ + \lambda_t + \epsilon_{it}\end{aligned} \qquad (2)$$

समीकरण (2) अधोलेख प जिला का द्योतक है और ज जनगणना वर्ष का द्योतक है।-----जनगणना वर्ष प्रतिचर का द्योतक है और मानक त्रुटियों को जिला स्तर पर संगुछितकिया जाता है।

तो उस समय होती है जब साक्षरता का स्तर पहले से ही उच्च हो, विशेष रूप से 72 वें शतमक से अधिक।

2.19 महाविद्यालयों की संख्या के साथ भी यही दृश्य दिखाई देते है यद्यपि विभिन्नताओं के साथ चित्र 8 ख उन दर्शाता है कि जो जिले जिनका महाविद्यालयों की संख्या के पृथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पंचमक में है, उनके पंचमक माध्य मूल्य वार्षिक रूप से 2,4,5,11 और 24 नए फर्मों से संबंधित है। तथापि, साक्षर जनसंख्या के अनुपात के विपरीत सबसे अधिक वृद्धि 40वें-60वें और 60वें-60वें शतमंक के बीच प्रतीत होती है जो यह दर्शाता है कि उद्यमशीलता में सबसे अधिक वृद्धि तब होती है जब में जिले में महाविद्यालयों की संख्या मध्यवर्ती है। कुल मिलाकर चित्र 8क और 8ख के परिणाम दर्शाते हैं कि बेहतर उद्यमशीलता के साथ साक्षरता के उच्च स्तरों और बेहतर शिक्षा संरचना का संबंध है।

2.20 चित्र 9 क और 9ख में बाक्स चित्रण यह सुझाव देता है कि बाजारों में प्रवर पहुंच भी उच्चतर उद्यमिता

चित्र 8 क: शिक्षा और उद्यमिता

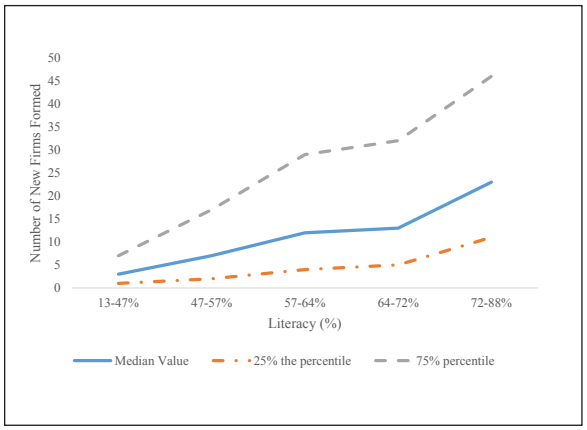

चित्र 8ख: महाविद्यालयों की संख्या और उद्यमिता

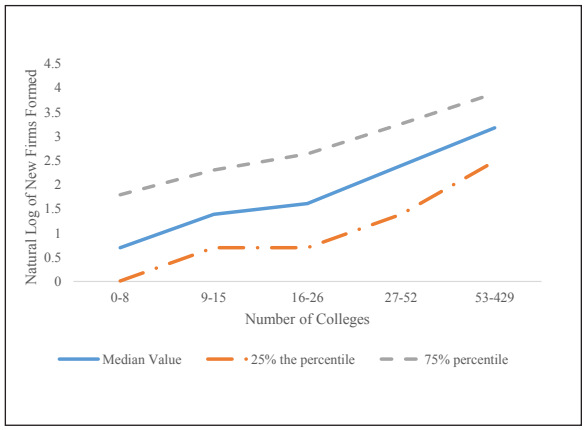

स्रोत: एम सी ए-21 एसएचआरयूजी और समीक्षा गणनाएं

बॉक्स 4: बाक्स--विषय-वस्तु

बाक्स की विषय-वस्तु रुचि स्वतन्त्र चरों को कैसे वितरित किया गया है को उनके वर्गों पर आधारित पांच भागों में बाटती है-सबसे निम्नतम पंचमक, 20वीं-40वीं शतमक, 40वीं-60वीं शतमंक, 60वें-80वें शतमंक और अधिकतम शतमंक। हर वर्ग के अन्तर्गत यह आश्रित चर की कीमत को ढूंढता है, ऐसी स्थिति में, नई फर्मों की संख्या निम्नलिखित मानों तक पहुंच जाती है।

(क) क्षैतिज रेखा द्वारा न्यूनतम को दर्शाया गया है (ख) चतुर्भुज की नीचे की रेखा को पहला पंचमक दर्शाता है (ग) एक वर्ग के चतुर्भुज के अन्दर की नीली रेखा माध्यिमिका को दर्शाता है (घ) एक वर्ग के चतुर्भुज की ऊपरि रेखा को तीसरा चतुर्थक है दर्शाता और (ड़) ऊपरि मुख्य क्षैतिज रेखा अधिकतम को दर्शाता है। बाक्स विषय वस्तु यह दिखाता है कि कैसे एक वर्ग से अन्य में जाने से दिए हुए वर्ग के अन्तर्गत स्वतंत्र चर के अलग मानों के लिए नई फर्मों की संख्या में परिवर्तन हो जाता है।

क्रियाकलाप से संबंधित है। चित्र 9क गावों की संख्या जो एक जिले में पक्की सड़क से जुड़ी हुई है उसके प्रभाव को दिखा रहा है, जिसे ''कनेक्टिविटी' नाम दिया गया। चित्र दिखाता है कि जब तक संपर्क 9 प्रतिशत तक बढ़ता है, इसका अर्थ है कि जिले के 91 प्रतिशत गॉव टार रोड़ से जुड़े हुए है। फर्म की संख्या एक समान बढ़ती है। भौतिक कनेक्टिविटी से इन परिणामों में से घटने की प्रक्रियाख्जब स्थानीय बाजार में पहुंच एक

सीमा से अधिक हो जाए, तब प्रतिस्पर्धा का स्तर बढ़ सकता है और यह संभवत उद्यमिता क्रियाकलापों को हतोत्साहित कर सकता है। इसी प्रकार से, एक सीमा से परे अवसंरचना विकास का बढ़ा हुआ स्तर क्षमतावान उद्यमियों के लिए अन्य अवसर खोल सकती है और जिसके फलस्वरूप उसके उद्यमी बनने की प्रेरणाएं कम हो जाती हैं।

चित्र 9क बाजार तक पहुंच और उद्यमिता

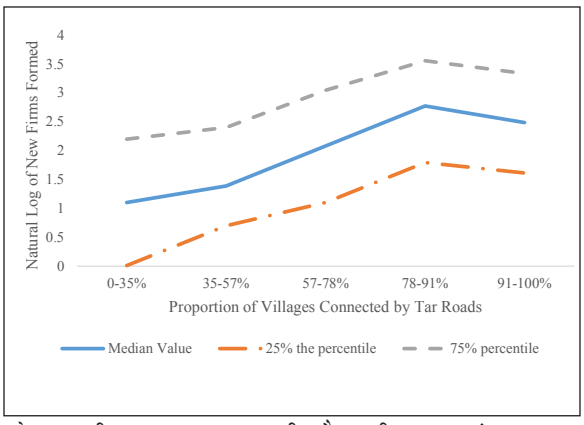

चित्र 9ख बड़े जनसंख्या केन्द्रों से दूरी और उद्यमिता

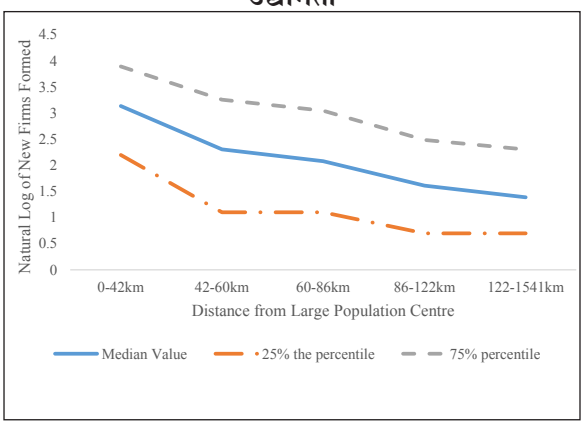

स्रोत: एमसीए-21, एसएचआरयूजी और समीक्षा गणनाएं

2.21 इसी प्रकार के स्वरूप चित्र 9ख में भी देख जा सकते हैं। चित्र 9ख जिलों की बाजार से निकटता के प्रभाव को दिखाता है जो कम से कम 500000 की जनसंख्या के केंद्र के निकटतम हो। वह जिले जो बाजार की निकटता के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवे पंचमक में हो उन्हें यह चित्र दर्शाता है, इस पंचमक के अन्तर्गत आए माध्यिमिका है। मूल्य फर्म से संबंधित है। हम चित्र 9ख में यह भी नोट करते हैं कि जेसे हम पंचमक के चारों घूमते हैं वैसे ही कमी की दर में भी गिरावट आने लगती है। उदाहरण के लिए, नई फर्मों की संख्या का अन्तर साठवे-अस्सीवे शतमंक की माध्यिका मूल्य से संबंधित है। इसी प्रकार से, नई फर्मों की संख्या में अन्तर साठवी-अस्सीवी परसेन्टाइल की माध्यिका मूल्य संबंधित है और उच्चतम पंचमक भी बहुत छोटा है। कुल मिलाकर, चित्र 9क और 9ख यह सुझाव देते हैं कि प्रवर भौतिक अवसंरचना उद्यमिता क्रियाकलाप को बढ़ाने में सहयोग देगी। यद्यपि, इससे भी यह सुझाव मिलता है कि अधिक सुधार से उद्यमिता में शिथलन भी आ सकता है। एक सीमा के पश्चात, स्थानीय बाजार में बढ़ती पहुंच अत्यधिक प्रतिस्पर्धा ला सकती है और उद्यमिता को प्रभावित कर सकती है। इसके अलावा, साक्षरता में वृद्धि या शिक्षा अवसंरचना में सुधार के साथ ऐसा कोई ह्रासमान प्रतिफल प्रतीत नहीं होता है। नए विश्वविद्यालयों की स्थापना एवं साक्षरता दर का बढ़ना फर्म की संख्याओं में एकसमान बढ़ोतरी को दर्शाता है।

तेज रफ्तार उद्यमिता एवं धन सृजन हेतु नीति निर्धारण

2.22 विश्लेज़ण से नया एक चित्रण उभर कर आता है। विश्व में उद्यमिता के लिहाज से तीसरा सबसे बड़ा पारिस्थितिकी तंत्र होने के बावजूद, अन्य देशों से तुलना की जाए तो लगता है कि भारत में प्रति व्यक्ति आधार पर औपचारिक उद्यमिता की दर अपेक्षाकृत कम है। प्रचलित ज्ञान के अनुसार, पाया गया कि जिले में खुलने वाली नई कंपनियों की संख्या और उस जिले की जीडीडीपी के बीच महत्वपूर्ण संबंध है। नई कंपनियों के पंजीकरण में 10 प्रतिशत वृद्धि का संबंध जीडीडीपी में 1.8 प्रतिशत वृद्धि से है। जीडीडीपी में उद्यमिता कार्यकलाप का यह योगदान विनिर्माण और सेवा सेक्टरों के लिए सर्वाधिक है। इसके अतिरिक्त, जिलों के बीच उद्यमिता कार्यकलाप में महत्वपूर्ण विविधता दर्शाती है कि ऐसी विविधता ज्ञात करने में सामाजिक और भौतिम

अवसंरचना द्वारा अहम भूमिका निभाई गई है। उदाहरण के लिए 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत के पूर्वी भाग में साक्षरता दर सबसे कम लगभग 59.6% है। इसी क्षेत्र में औपचारिक उद्यमिता कार्यकलाप भी सबसे कम हैं। अत: अध्याय में विश्लेषण निम्नलिखित निहितार्थों को परिलक्षित करता है।

2.23 सर्वप्रथम, अधिक विद्यालयों तथा महाविद्यालयों की संस्थापना के जरिए साक्षरता के स्तर में वृद्धि करने संबंधी उपायों से लोग उद्यमिता के लिए प्रेरित होंगे और फलस्वरूप स्थानीय संपदा में वृद्धि होगी। भारत के सॉफ्टवेयर निर्यातों [अरोड़ा एवं बैज, 2011] में इंजीनियरी कॉलेजो के निजीकरण के सफल योगदान के पश्चात्, सरकारें शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षण क्षमता की वृद्धि करने के लिए शिक्षा के निजीकरण के विकल्प पर भी विचार कर सकती है।

2.24 दूसरे तारकोल की सड़कों के माध्यम से गांवों तक बेहतर सड़क संपर्क से संभावना है कि स्थानीय बाज़ारों तक पहुंच बढ़ेगी तथा उद्यमिता कार्यकलापों में सुधार आएगा। तथापि, प्राथमिकता के लिहाज से यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि शिक्षा में निवेश। इसके अतिरिक्त, यह भी हो सकता है कि स्थानीय बाज़ारों तक पहुंच बढ़ाने से अन्य प्रकार के अवसर सृजित हो जाएं जिनसे उद्ययमिता निरूत्साहित हो जाए। इसलिए अवसंरचना में निवेश, विशेषकर जो उद्यमिता संबंधी कार्यकलापों में वृद्धि हेतु किया गया है, का मूल्यांकन इस बात को समक्ष रखकर किया जाना चाहिए कि कैसे बेहतर अवसंरचना से अन्य तरह के अवसरों का सृजन होता है जो संभवत: जिले की जीडीडीपी के लिए अहम हों।

2.25 तीसरे, जो नीतियां कारोबारी सुगमता तथा लचीले श्रम विनियमों को प्रोत्साहन देती हैं, उद्यमिता कार्यकलापों, विशेषकर विनिर्माणकारी सेक्टर के कार्यकलापों को प्रौत्साहन प्रदान करेंगी। चूंकि विनिर्माण सेक्टर में अधिकतम रोज़गार सृजन करने की क्षमता है, इसलिए रोज़गार सृजन प्रोत्साहन हेतु राज्यों को कारोबारी सुगमता और लचीले श्रम विनियमों को सामर्थ्यशील बनाने पर ध्यान केन्द्रित करना होगा।

अधयाय एक नजर में

- यह अध्याय भारत में 500 से अधिक जिलों में प्रशासनिक परिमामिड के धरातल पर सामग्री और उद्यमशीलता गतिविधि के संचालकों की समीक्षा करता है। विश्लेषण कॉर्पोरेट कार्यालय मंत्रालय (एमसीए)-21 के आंकड़ों के अनुसार इन सभी जिलों में औपचारिक क्षेत्र में नई फर्म के निर्माण हेतु व्यापक आंकड़े प्रदान करता है।
- सर्वप्रथम, उद्यमिता पर विश्व बैंक के आंकड़ों का उपयोग करते हुए, यह अध्याय इस बात की पुष्टि करता है कि भारत नई फर्मो के निर्माण के मामलें में तीसरे स्थान पर है। इसी आंकड़े से पता चलता है कि 2014 से भारत मे नई फर्म का निर्माण प्रभावशाली रूप से बढ़ा है। 2006-2014 के दौरान औपचाकरिक क्षेत्र में नई फर्मो की संख्या 3.8 प्रतिशत के संचयी वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ी जबकि 2014 से 2018 तक विकास दर 12.2 फीसदी रही। नतीजनत, 2014 में बनाई गई लगभग 70,000 नई फर्मो से, 2018 में नई फर्मो की संख्या लगभग 80 प्रतिशत बढ़कर 1,24,000 हो गई है।
- दूसरा, सेवा क्षेत्र में भारत की नई आर्थिक संरचना, यानी तुलनात्मक लाभ को दर्शाते हुए, सेवाओं में नई फर्म का निर्माण विनिर्माण, बुनियादी ढांचे या कृषि की तुलना में काफी अधिक है।
- तीसरा, जमीनी स्तर पर उद्यमशीलता केवल आवश्यकता से प्रेरित नहीं है क्योंकि जिले में नई फार्मो के पंजीकरण में 10 प्रतिशत की वृद्धि के कारण जीडीडीपी में 1.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस प्रकार, प्रशासनिक पिरामिड के निचले स्तर में उद्यमशीलता का एक जिले का जमीनी स्तर पर संपत्ति सृजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जीडीडीपी पर उद्यमशीलता की गतिविधि का यह प्रभाव विनिर्माण और सेवा क्षेत्रें के लिए अधिकतम स्तर पर है।
- चौथा, नई कंपनियों का निर्माण भारतीय जिलों और क्षेत्रें में बहुत विषम है। इसके अतिरिक्त, यह स्थिति पूरे भारत में फैली हुई है, केवल कुछ शहरों तक ही सीमित नहीं है।
- पांच, एक जिले में शिक्षा स्थानीय उद्यमिता को महत्वपूर्ण ढ़ंग से प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए जनगणना 2011 के अनुसार भारत के पूर्वी भाग की साक्षरता दर न्यूनतम, 59.6 प्रतिशत है। यह वह क्षेत्र है जिसमें नई फर्मो का निर्माण न्यूनतम है। वस्तुत: उद्यमिता पर साक्षरता का प्रभाव उस समय अत्यधिक उल्लेखनीय होता है जब यह 70 प्रतिशत से ऊपर हो।

- छठा, एक जिलें में स्थानीय शिक्षा स्तर और भौतिक अवसंरचना की गुणवत्ता नये फर्मों के सृजन पर महत्वपूर्ण प्रभाव रखते है।
- अंत में, वह नीतियां जो व्यापार करने में सुगमता प्रदान करती है और श्रम अधिनियम जो नये फर्म सृजन में सक्षम हो, विशेषकर विनिर्माण क्षेत्र में। अत: विनिर्माण क्षेत्र में हमारे युवाओं के लिए अपार संभावनाएं हैं और व्यापार सुगमता के बढ़ाने से तथा लचीली श्रम नीति अपनाने से जिलों में और पूरे देश में अधिकतम रोजगार सृजित होंगे।
- शिक्षा, साक्षारता और भौतिक अवसंरचना अन्य नीतियां है जिसे जिला और राज्य प्रशासन को उद्यम विकास के लिए अपनानी चाहिए जिससे रोजगार और धन सृजन हो सके।

संदर्भ

Arzaghi, M. and Henderson, J.V., 2008. Networking off madison avenue. *The Review of Economic Studies*, *75*(4), pp.1011-1038.

Bönte, W., Falck, O. and Heblich, S., 2009. The impact of regional age structure on entrepreneurship. *Economic Geography*, *85*(3), pp.269-287.

Carlino, G.A., Chatterjee, S. and Hunt, R.M., 2007. Urban density and the rate of invention. *Journal of Urban Economics*, *61*(3), pp.389-419.

Dahl, M. and Sorenson, O., 2007. Home sweet home: Social capital and location choice. *Social Science*, pp.1-22.

Evans, D.S. and Leighton, L.S., 1989. The determinants of changes in US self-employment, 1968–1987. *Small Business Economics*, *1*(2), pp.111-119.

Ghani, E., Kerr, W. and O'Connell, S., 2011. Promoting entrepreneurship, growth, and job creation. *Reshaping Tomorrow*, pp.168-201.

Glaeser, E.L. and Kerr, W.R., 2009. Local industrial conditions and entrepreneurship: how much of the spatial distribution can we explain?. *Journal of Economics & Management Strategy*, *18*(3), pp.623-663.

Meki, M., 2019, September. Microequity For Microenterprises: Evidence From An Artefactual Field Experiment And Survey. In *Economic Research Forum Working Papers* (No. 1348).

Mittelstädt, A. and Cerri, F., 2008. Fostering entrepreneurship for innovation.

OECD, 1998. Fostering entrepreneurship. *Industries Services and Trade*, *16*(1), p.277.

परिशिष्ट

तालिका ए-1 नई फर्मों के नेपेरियन लॉग पर जीडीडीपी के नेपेरियन लॉग का ओएलएस प्रतीपगमन।

चर	(1) जीडीडीपी का लॉग	(2) जीडीडीपी का लॉग	(4) जीडीडीपी का लॉग
03 वर्ष पहले स्थापित नई फर्मों का लॉग	0.18*** (0.01)		
03 वर्ष पहले स्थापित नई कृषि का लॉग		0.03*** (0.00)	
03 वर्ष पहले स्थापित निर्माण फर्म का लॉग		0.07*** (0.00)	
03 वर्ष पहले सेवा क्षेत्र में स्थापित नई फर्मों का लॉग		0.07*** (0.00)	
03 वर्ष पहले बुनियादी क्षैत्रो में स्थापित नई फर्मों का लॉग		0.05*** (0.00)	
03 वर्ष पहले अन्य क्षेत्रों में स्थापित नई फर्मों का लॉग		0.04*** (0.01)	
दक्षिण भारत			10.96*** (0.05)
उत्तर भारत			-0.39*** (0.06)
पूर्व भारत			-0.68*** (0.07)
पश्चिम भारत			-0.24*** (0.06)
03 वर्ष पहले स्थापित दक्षिण भारत X नई फर्मों का लॉग			0.22*** (0.02)
03 वर्ष पहले स्थापित उत्तर भारत X नई फर्मों का लॉग			-0.06*** (0.02)
03 वर्ष पहले स्थापित पूर्व भारत X नई फर्मों का लॉग			0.03 (0.02)
03 वर्ष पहले स्थापित पश्चिम भारत X नई फर्मों का लॉग			0.02 (0.03)
स्थिरांक	10.66*** (0.02)	11.21*** (0.04)	
टिप्पणियां	5,591	5,591	5,591
आर-वर्ग	0.85	0.87	0.77
स्टेट स्थिर प्रभाव	Yes	Yes	No
वर्ष स्थिर प्रभाव	Yes	Yes	Yes
जिले स्तर पर संगुछित त्रुटियां	Yes	Yes	Yes

*p<0.10, **p<0.05, ***p<0.01

तालिका I.2: वास्तविक और सामाजिक क्षेत्रों के उपायों पर नई फर्मों के प्राकृतिक लॉग का ओएलएस प्रतीपगमन

चर	(1) गठित की गई नई फर्मों का प्राकृतिक लॉग	(2) गठित की गई नई फर्मों का प्राकृतिक लॉग-कृषि	(3) गठित की गई नई फर्मों का प्राकृतिक लॉग-विनिर्माण	(4) गठित की गई नई फर्मों का प्राकृतिक लॉग-सेवा
पिछली जनगणना के अनुसार जनसंख्या घनत्व का प्राकृतिक लॉग	0.18***	0.09**	0.16***	0.24***
	(0.04)	(0.03)	(0.04)	(0.04)
पिछली जनगणना के अनुसार कॉलेजों का प्राकृतिक लॉग	0.74***	0.45***	0.69***	0.72***
	(0.09)	(0.08)	(0.10)	(0.09)
पिछली जनगणना के अनुसार साक्षर जनसंख्या साक्षर जनसंख्या का प्रतिशत	0.07***	0.03***	0.06***	0.08***
	(0.01)	(0.01)	(0.01)	(0.01)
पिछली जनगणना के अनुसार तार की सड़कों के माध्यम से जुड़े गांव का प्रतिशत	0.02***	0.01***	0.02***	0.02***
	(0.00)	(0.00)	(0.01)	(0.00)
पिछली जनगणना के अनुसार बिजली की पहुंच वाले गांव का प्रतिशत	0.00	0.00	0.01	0.00
	(0.00)	(0.00)	(0.00)	(0.00)
जनसंख्या केंद्र से 500 के की औसत दूरी का प्राकृतिक लॉग	-0.15***	-0.16***	-0.18***	-0.16***
	(0.05)	(0.03)	(0.05)	(0.05)
निरंतर	-6.11***	-5.96***	-7.47***	-7.92***
	(0.67)	(0.51)	(0.72)	(0.67)
टिप्पणियां	5,337	5,337	5,337	5,337
आर-चुकता	0.53	0.44	0.43	0.56
राज्य निवल प्रभाव	मौजूद है	मौजूद है	मौजूद है	मौजूद है
जनसंख्या निवल प्रभाव	मौजूद है	मौजूद है	मौजूद है	मौजूद है
जिला स्तर पर हुई त्रुटियां	मौजूद है	मौजूद है	मौजूद है	मौजूद है

*p<0.10, **p<0.05, ***p<0.01